

९१. दे इतना वरदान

दे इतना वरदान ॥धृ.॥

तुझको ध्यावूँ तुझको गाऊँ, और न मांगू दान ॥

दे वाणीमे ऐसी रसना, जिससे सबको कर लूँ अपना
मुखसे ऐसी निकले रचना, सुनके झूमे जहान ॥१॥

तनमन लागे तेरे कारण, जनम मरणभी तेरे कारण
तू ही बने जीवनका कारण, ज्युँ मम घटका प्राण ॥२॥

युँ तो कोटिक जनम फेरमे, रमा रहा हूँ झूठ मिथ्यमे
कब तक भेद रहे तू मुझमे, बोलो कृपानिधान ॥३॥

भटक भटक मन तुझको चाहे, ज्युँ भूला घर शामको आये
मधुसूदन अब कहाँको जाये, छोडके तेरा ध्यान ॥४॥